4. मुक्तिबोध कृत 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' काव्य संकलन पर प्रकाश डालिए।

5. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य की संवेदना एवं शिल्प का विवेचन कीजिए।

6. नन्दकिशोर आचार्य के काव्य की संवेदनागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

7. सोहनलाल द्विवेदी के गीतों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

8. 'नवगीत परम्परा' में वीरेन्द्र मिश्र के गीतों का मूल्यांकन कीजिए।

9. भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में संवेदना के विविध पक्षों का उद्‌घाटन कीजिए।

MAHD–08

December – Examination 2021

M.A. (Final) Examination

HINDI

आधुनिक हिन्दी कविता और गीत परम्परा

Paper : MAHD-08

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है।

1. (i) समकालीन कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

   (ii) शमशेर बहादुर सिंह की किन्हीं **दो** काव्य रचनाओं के नाम बताइए।

(iii) 'नाश और निर्माण' काव्य संग्रह के रचयिता का नामोल्लेख कीजिए।

(iv) 'खूंटियों पर टंगे लोग' कविता संकलन का भाव-बोध स्पष्ट कीजिए।

(v) धर्मवीर भारती कृत 'कनुप्रिया' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(vi) 'नवगीत' की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(vii) नीरज कवि के काव्य में प्रणयानुभूति पर टिप्पणी लिखिए।

(viii) 'रात और शहनाई' गीति काव्य संग्रह के रचयिता का नाम बताइए।

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

आज की दुनिया में
विवशता
भूख
मृत्यु
सब सजाने के बाद ही

पहचानी जा सकती हैं।
बिना आकर्षण के दुकानें टूट जाती हैं।
शायद कल उनकी समाधियाँ वहीं बनेगीं।
जो मरने के पूर्व
कफन और फूलों का
प्रबन्ध नहीं कर लेंगे।
ओछी नहीं है दुनिया
मैं फिर कहता हूँ,
महज उसका सौन्दर्य-बोध
बढ़ गया है।

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

समाज अमूर्त होता है
व्यक्ति नहीं
और व्यक्ति के फूलत्व को कुचल दोगे
तो वन
गन्धमादन कैसे बन पाएगा पार्थ
फूल का एकाकीपन
अरण्य की सामूहिकता की शोभा है
विरोधी नहीं।